वर्ष - 5, अंक - 8, अगस्त 2014

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

बिहार सरकार

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
(सांस्कृतिक कार्य निदेशालय)

आवश्यक सूचना

बिहार कला पुरस्कार (2014-15) के लिए नामांकन

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि बिहार कला पुरस्कार और राष्ट्रीय सम्मान (2014-15) योजना के अन्तर्गत राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों के लिए चाक्षुष कला, रंगमंच, नृत्य एवं संस्कृति से जुड़े संस्थाओं, कला समीक्षकों, कला इतिहासकारों, रसीकजनों और विद्वानों से पुरस्कार सम्मान हेतु उत्कृष्ट कलाकार/कला मर्मज्ञों के नाम की अनुशंसा/नामांकन अपेक्षित है।

नामांकन/अनुशंसा भेजने की अंतिम तिथि 25 अगस्त, 2014 है।

अनुशंसा/नामांकन निम्नांकित पुरस्कार के लिए किये जाने हैं :-

(क) चाक्षुष कला क्षेत्र में कलाकारों का

1. राधामोहन पुरस्कार (समकालीन कला)
2. कुमुद शर्मा पुरस्कार (महिला कलाकार)
3. सीता देवी पुरस्कार (लोक कला)
4. दिनकर पुरस्कार (कला लेखन)

(ख) प्रदर्श कला क्षेत्र के कलाकारों का

1. पं. रामचतुर मल्लिक पुरस्कार (शास्त्रीय गायन)
2. भिखारी ठाकुर पुरस्कार (रंगमंच)
3. विन्ध्यवासिनी देवी पुरस्कार (लोक गायन)
4. रामेश्वर सिंह काश्यप पुरस्कार (प्रदर्श कला लेखन)
5. बिस्मिल्लाह खान पुरस्कार (वाद्य वादन)
6. अम्बपाली पुरस्कार (नृत्य)

(ग) प्रदर्श कला के लिए (राष्ट्रीय स्तर) राष्ट्रीय सम्मान

(घ) चाक्षुष कला के लिए (राष्ट्रीय स्तर) राष्ट्रीय सम्मान

(ङ) राज्य के दो वरिष्ठ कलाकार (चाक्षुष एवं प्रदर्श कला) को लाइफ टाईम एचीवमेंट पुरस्कार

2. उपर्युक्त कंडिका 'क' एवं 'ख' में अंकित प्रत्येक पुरस्कार के अन्तर्गत राज्य के चाक्षुष एवं प्रदर्श कलाओं में सृजनरत वरिष्ठ कलाकार एवं युवा कलाकारों को प्रदान किये जायेंगे। वरिष्ठ पुरस्कार में राशि 35,000/- (पैतीस हजार) युवा पुरस्कार में राशि 10,000 (दस हजार) तथा प्रशस्ति पत्र और शॉल आदि दिए जायेंगे। युवा कलाकार की अधिकतम आयु 25 अगस्त, 2014 तक 40 वर्ष की होनी चाहिए। इसके लिए अभिप्रमाणित जन्म तिथि प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है।
3. कंडिका ग, घ, एवं ङ के पुरस्कार की राशि एक-एक लाख रुपये है।
4. कंडिका 'ग' एवं 'घ' के लिए राष्ट्रीय स्तर के राज्य एवं राज्य के बाहर के नामचीन कलाकार तथा 'ङ' के लिए बिहार राज्य के नामचीन और वरिष्ठ कलाकार (चाक्षुष/प्रदर्श) का नामांकन/अनुशंसा किया जा सकता है।
5. नामांकन/अनुशंसा के साथ प्रस्तावक को अपना परिचय, नाम, पता एवं दूरभाष सं. स्पष्ट रूप से अंकित करते हुए अनुशंसित कलाकार का बायोडाटा, साक्ष्य आदि के साथ संलग्न करना आवश्यक होगा।
6. अनुशंसा पत्र में स्पष्ट रूप से अंकित करना होगा कि उक्त कलाकार की अनुशंसा किस वर्ग, सम्मान/पुरस्कार के लिए है। **कलाकारों द्वारा स्वयं के लिए की गई अनुशंसा मान्य नहीं होगी।**
7. पुरस्कार/सम्मान के लिए अलग-अलग नामांकन/अनुशंसा दिनांक 25 अगस्त, 2014 तक निदेशक, सांस्कृतिक कार्य, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार, पटना कमरा सं. 330, तृतीय मंजिल, विकास भवन, बेली रोड, पटना के पते पर किये जा सकते हैं।

10/7/14

(के.डी.प्रौज्ज्वल)
निदेशक, सांस्कृतिक कार्य

वर्ष - 5, अंक - 8, अगस्त 2014
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
श्री विनय बिहारी

प्रधान संपादक
चंचल कुमार

संपादक
विनोद अनुपम

संपादक मंडल
सुबोध कुमार चौधरी
के.डी. प्रौज्ज्वल (संस्कृति)
अरविन्द ठाकुर (क्रीड़ा)
परवेज अख्तर (संग्रहालय)
अतुल कुमार वर्मा (पुरातत्व)

सम्पादकीय सम्पर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email : culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

प्रधान सम्पादक की कलम से

कला सभ्य समाज की अनिवार्यता है। यह अपने समाज को पहचान ही नहीं देती, प्रतिष्ठा भी दिलाती है। विश्व के सांस्कृतिक नक्शे पर मधुबनी के एक छोटे से गांव रांटी की विशेष पहचान है तो उसकी वजह वहां के स्थानीय लोगों द्वारा सदियों पुरानी मिथिला चित्रकला का संरक्षण संवर्धन है। रांटी तो एक उदाहरण भर है, बिहार के गांव-गांव में ऐसे लोग ऐसे समूह, ऐसे समाज अभी भी सक्रिय हैं, जिन्होंने अपनी मूल पारंपरिक कला को अपने खून पसीने से सींच कर जीवित रखने की कोशिश की है। दरभंगा के रांटी की गोदावरी दत्ता को मिथिला चित्रकला की परंपरा अपनी मां सुभद्रा देवी से हस्तगत हुई। इन्होंने उस कला परंपरा को स्वयं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मिथिला ही नहीं दुनिया भर की इच्छुक महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनके हाथों में अपनी समृद्ध विरासत सौंप रही हैं। इसी का सशक्त उदाहरण है बिहार की लोकगाथाएँ। यहां लोकगाथाओं की यशस्वी परंपरा अभी भी मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित होती चली आ रही है तो उसके पार्श्व में ऐसे ही समर्पित कला साधकों का समूह है। बिहार की मशहूर लोक गाथा 'हिरणी बिरणी' के पुरोधा श्री करंट लाल नट के नाट्य दल में कॉलेजों में पढ़ने वाले युवाओं को भी सक्रिय भूमिका में देखा जाता है तो निश्चित रूप से उसकी वजह कहीं न कहीं नई पीढ़ी के माध्यम से अपनी कला को जीवित रखने की उनकी अनथक कोशिश ही होगी।

कुछ वर्ष पूर्व जब 'बिहार कला पुरस्कार' की योजना बनी थी तो उसका उद्देश्य कला और संस्कृति के ऐसे ही सेनानियों को सम्मानित करना था। पिछले दिनों एक भव्य समारोह में एक बार फिर हमें 'बिहार कला पुरस्कार' से कलाकारों को सम्मानित करने का अवसर मिल सका। इस अंक में इस समारोह की विशिष्ट झलकियां पटना कलम के पाठकों के लिए प्रस्तुत की जा रही हैं ताकि बिहार की कला को गौरवान्वित करने वाले उस पल में हम आपको भी शामिल कर पाएं। इसी अंक में आगामी 'बिहार कला पुरस्कार 2015' की घोषणा भी आप देख सकते हैं। जैसाकि विदित है 'बिहार कला पुरस्कार' के लिए आवेदन नहीं आमंत्रित किए जाते, अनुशंसाएं आमंत्रित की जाती हैं। पटना कलम के सुधी कला प्रेमी पाठकों से भी निवेदन है कि वे अपनी अनुशंसा से हमें बिहार के कोने-कोने में पहुंचने में सहयोग करें, ताकि सर्वश्रेष्ठ कला प्रतिभा को सम्मानित करने का अवसर मिल सके ।

इसी अंक में कलाकार कल्याण कोष से कलाकारों को वित्तीय सहायता हेतु आवेदन के आमंत्रण भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं। विदित है कि इस योजना के अनुसार बीमार अथवा घायल कलाकारों के इलाज में सहयोग के अतिरिक्त कला की उच्च शिक्षा, प्रदर्शनी हेतु भी कलाकारों को सहयोग किया जाता रहा है। लेकिन हम मानते हैं कि कला संस्कृति से जुड़ी कोई भी योजना कलाकारों के सहयोग के बगैर पूरी नहीं हो सकती। पटना कलम के माध्यम से हम अपने पाठकों से भी सहयोग की उम्मीद रखते हैं ताकि अधिकाधिक कलाकारों तक हम पहुच सकें और अधिकाधिक कलाकार विभाग की योजनाओं से लाभान्वित हो सकें ।

शुभकामनाओं के साथ

(चंचल कुमार)
सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

कैमरे में पीपल और पाकड़

पेड़-पौधे भी हमें हमारी धार्मिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की याद दिलाते हैं। कोटेश्वर नाथ मंदिर के पास मौजूद पीपल का पेड़ और सीतामढ़ी में स्थित पंतपाकड़ हमारे ऐतिहासिक धरोहर का अहम हिस्सा बन चुकी है। इनकी विशिष्टता को दुनिया के समक्ष लाने के उद्देश्य से कला संस्कृति विभाग द्वारा एक फोटोग्राफी प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। प्रतियोगिता में चयनित फोटोग्राफरों को बिहार ललित कला अकादमी के अध्यक्ष आनंदी प्रसाद बादल ने पुरस्कृत किया। प्रथम पुरस्कार पाने वाले को बीस हजार रुपये, द्वितीय पुरस्कार पाने वाले को 15 हजार और तृतीय पुरस्कार पाने वाले को दस हजार की राशि का इनाम मिला। एक प्रतियोगिता में फोटोग्राफरों को सीतामढ़ी के ऐतिहासिक पाकड़ वृक्ष की तस्वीर लेनी थी। वहीं दूसरी प्रतियोगिता मेन गया के ऐतिहासिक पीपल वृक्ष की भी तस्वीरें लेने की थी। इनमें से बेहतरीन तस्वीरों को चुना जाना था। मेन गया के कोटेश्वरनाथ मंदिर के पीपल के वृक्ष की ऐतिहासिक महत्ता है। कहते हैं कि पीपल के पेड़ की लतें हमेशा शिव की मंदिर के आगे झुकी रहती हैं। यह पेड़ इतना विशाल है कि इसका कद पांच बांस के बराबर है। वहीं सीतामढ़ी के पंत पाकड़ की हर खूबी को अपने कैमरे में कैद करना था। इस पेड़ की जड़ें कहां से निकलती किसी को नहीं पता।

एक समय सीमा के अंदर ही अपनी तसवीरों को विभाग में जमा करनी थी। प्रतियोगिता में कुल 17 फोटोग्राफरों ने हिस्सा लिया। निर्णायक के रूप में डॉ. वरुण कुमार सिन्हा, रजनीश कुमार राज और रविशंकर साहनी ने निर्णय किया कि किस तस्वीर को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। निर्णायक रजनीश राज ने बताया कि हमने जजमेंट के समय सभी तस्वीरों को बिना नाम के सामने रखा था। हमने धार्मिक महत्ताओं को देखते हुए सर्वश्रेष्ठ फोटो को चुना।

पंत पाकड़ के विजेता :

1. रमेश कुमार–प्रथम पुरस्कार

तस्वीर की खासियत–इस मंदिर में इसी पेड़ के पास सीता जी की डोली रूकी थी। इसी पेड़ के नीचे उनकी डोली को उतारा गया था। इस तस्वीर में धार्मिक महत्व को देखते हुए प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया।

2. विजय कुमार जैन–द्वितीय पुरस्कार

तस्वीर की खासियत–इस तस्वीर में यह ऐतिहासिक पेड़ हैं। अलग-अलग जगहों से इसकी जड़ें निकलती हैं और फिर जमीन में घुस जाती हैं। पेड़ में सालों भर पाकड़ का फल होता है। फोटो में मंदिर का इस पेड़ के साथ का कनेक्शन बताता है।

3. रवि कुमार–तृतीय पुरस्कार

तस्वीर की खासियत–यह पेड़ जैसे की चीजों को सहारा दे रही है और जीवों को घर भी दे रहा ह। बच्चे खेल रहे हैं यह उनकी जिन्दगी में भी अहम भूमिका निभाता है।

4. राजेश कुमार–सांत्वना पुरस्कार

मेन गया का ऐतिहासिक पीपल वृक्ष

1. विश्वजीत कुमार–सीवान के सबसे युवा फोटोग्राफर जिन्हें प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया ।

तस्वीर की खासियत–सभी तनों को मंदिर के सामने झुकता हुआ दर्शाने की कोशिश की है। इस पेड़ की जड़ें मंदिर की ओर झुकी हुई है जोकि इस तस्वीर में साफ झलक रही है।

2. अनिल कुमार सिंह–द्वितीय पुरस्कार

तस्वीर की खासियत–फोटोग्राफर ने इस फोटो में जटिलता को बखूबी दर्शाया है। एक में एक उलझी और तनों को अलग-अलग पहचानना जटिल है।। इस तस्वीर की जटिलता ही इसकी खासियत है।

3. रवि शर्मा–तृतीय पुरस्कार

4. चंचल कुमार जैन–सांत्वना पुरस्कार

5. राजीव कुमार–सांत्वना पुरस्कार

शुक्रगुलजार में दिखे जीवन के नौ रस

भारतीय नृत्य कला मंदिर का बहुउद्देश्यीय सांस्कृतिक परिसर का ऑडिटोरियम 25 जुलाई को एक यादगार शाम का गवाह बना। यह मौका था कला संस्कृति विभाग की ओर से आयोजित विशेष शुक्रगुलजार कार्यक्रम का जिसमें ओडिसी की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना मधुस्मिता मोहंती और नर्तक रमेश चन्द्र जेना ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी। भुवनेश्वर से आए दोनों कलाकारों ने जब अपनी प्रस्तुति दी तो देखने वाले उनके नृत्य में गोते लगाते नजर आए। कलाकारों ने कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण में होने वाली गणेश वंदना से की। जिसमें ईश्वर के प्रति एक कलाकार की स्तुति और समर्पण दिखा, कलाकार ईश्वर से अपने नृत्य की भाषा में ही प्रार्थना करते कि हैं ईश्वर तेरा नाम लेकर हम अपनी कला का प्रदर्शन करने जा रहे हैं हम पर अपनी कृपा बनाए रखना।

इसके बाद ओडिसी नृत्य के पल्लवी की प्रस्तुति दी गई, इसमें कलाकारों ने विभिन्न कर्ण और अंगहार के जरिये लयात्मक नृत्य की प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पल्लवी के बाद नाट्य शास्त्र के नवरस की प्रस्तुति दी गई। इसमें जीवन के नौ रसों श्रृंगार रस, हास्य रस, करुण रस, वीर रस, रौद्र रस, भयानक रस, अद्भुत रस, वीभत्स रस, शांत रस को मंच पर अपने नृत्य से उतारा। श्रृंगार रस में जहां प्रेम और प्रेमी प्रेमिका की मिलन की चाह, अपने प्रियतम के लिए श्रृंगार करती प्रेमिका की भावनाएं दिखीं, वहीं हास्य रस में जीवन में हास्य का महत्त्व और हास्य से जीवन के सौन्दर्य में हुई वृद्धि दिखी । इसके बाद पेश किए गए करूण रस में करूणा ममता, वात्सल्य दिखा। वीर रस में युद्ध के मैदान में योद्धा की वीरता और जीवन के झंझावातों में वीरता का परिचय देने वाला साहस नृत्यों में सामने आया। शांत रस में मनुष्य जब जीवन की लालसाओं और इच्छाओं से ऊपर उठ जाता है तो उसमें शांति या मोक्ष की तलाश की चाह दिखी जो कि जीवन का अंतिम लक्ष्य है। इसके साथ ही रौद्र रस, भयानक रस, अद्भुत रस और वीभत्स रस नृत्य के माध्यम से सामने आए। कलाकारी ने अपनी जीवंत प्रस्तुति से मन की अनुभूतियों का बेहद ही सजीव चित्रण इन रसों का किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद थे।

साकिब

सम्मानित हुइ

कला संस्कृति एवं युवा विभाग की ओर से आयोजित 'बिहार कला पुरस्कार 2014' का उद्घाटन करने के बाद समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने घोषणा की कि कलाकारों के लिए सरकारी सेवाओं में आरक्षण की व्यवस्था की जायेगी। साथ ही राज्य सरकार द्वारा वयोवृद्ध कलाकारों के स्वास्थ्य लाभ हेतु कल्याण कोष से राशि मुहैया करायी जायगी। यह घोषणा मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने मुख्यमंत्री सचिवालय संवाद में कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा आयोजित बिहार कला पुरस्कार 2014 कार्यक्रम में 25 विधाओं के कलाकारों को पुरस्कृत कया। नालंदा के करंट लाल नट एवं मधुबनी के गोदावरी दत्त को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड दिया गया। इससे पहले कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार में राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता रहेगा। सरकार राज्य में कला संस्कृति के विकास के लिए कृतसंकल्प है इसलिए इसके लिए बजट की कमी नहीं होने दी जाएगी। इन आयोजनों में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने में सरकार कभी पीछे नहीं रहेगी। उन्होंने कहा, आज युवाओं के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। जब-जब युवा वर्ग अंगड़ाई लेता है, तब-तब युग परिवर्तन होता है।

मुख्यमंत्री ने इस बात पर चिन्ता जतायी कि आज समाज में लोग अपनी संस्कृति को दोयम दर्जे का समझ दूसरी संस्कृति की ओर आकर्षित होते हैं, जबकि भारतीय संस्कृति संसार में सर्वश्रेष्ठ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कला, संस्कृति एवं युवा विभाग ने एक अच्छी परंपरा की शुरुआत की है और इससे कला को प्रोत्साहन मिल सकेगा। कला एक ऐसी विद्या है जो समाज के मार्गदर्शन का काम कर सकती है। पुरस्कार जिस रूप में प्राप्त हो, वह अमूल्य धरोहर है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति संसार में सर्वश्रेष्ठ है। हम पाश्चात्य संस्कृति की नकल करने के चक्कर में अपनी सभ्यता संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। आज युवा वर्ग भटकाव का शिकार है, आवश्यकता है कि युवा अपनी संस्कृति और कला को जाने समझे। ऐसा कर एक बेहतर समाज का निर्माण किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आज समाज के जो युवा पथ से भटक गये हैं, वे कला, संस्कृति के माध्यम से पुन: समाज की मुख्यधारा में आ पायेंगे तथा नये जोश एवं उमंग के साथ सृजनात्मक भूमिका अदा करेंगे। कला एक ऐसी विधा है, जो समाज के लोगों का मार्गदर्शन करती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कला संदेश देती है कि हम एक हैं। यदि हम एक हैं, तो नेक हैं। उसमें

सुंदरता है। अगर हम अनेक हो जाते हैं तो इसकी सुंदरता खत्म हो जाती है। जाति, धर्म एवं भाषा जैसी संकीर्ण भावनाओं से दूर रहना चाहिये। कलाकार समाज के लिए अग्रणी भूमिका में है। मुख्यमंत्री हिन्दी, मैथिली, मगही एवं बज्जिका भाषाओं में लोकगीत एवं कला को सहारा दिये जाने की जरूरत पर जोर दिया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें 'पोर्टल्स टू द पास्ट' तथा 'सुपर हीरोज

ई कला परंपरा

ऑफ बिहार' का लोकार्पण भी किया। इस अवसर पर कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विनय बिहारी ने वयोवृद्ध तबला वादक बीरेन्द्र घोष, पेटिंग कलाकार पुरुषोत्तम रस्तोगी एवं नाटककार रॉबिन शा पुष्प को 51-51 हजार रुपये बतौर चिकित्सा सहायता राशि देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि वैसे कलाकार जो वयोवृद्ध हैं, उन्हें कलाकार कल्याण कोष से राशि मुहैया करायी जायेगी, ताकि वे स्वास्थ्य लाभ कर सके। उन्होंने कहा कि राज्य के वैसे वयोवृद्ध कलाकार जो बीमार हैं और आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं वह कलाकार कल्याण कोष से आर्थिक सहायता ले सकते हैं। इसके लिए सरकार अब और सुदृढ़ तरीके से विज्ञापन भी निकालेगी ताकि उन्हें सरकार की इस योजना की जानकारी हो सके। उन्होंने कहा कि अगली बार से कलाकारों को सम्मानित करने का कार्यक्रम बड़े ही भव्य तरीके से होगा। उन्होंने अभिनय के क्षेत्र में भी पवन सिंह, विजय खरे जैसे कलाकारों को पुरस्कार देने की बात कही। साथ ही भोजपुरी समेत राज्य की छह क्षेत्रीय भाषाओं के नामी कलाकारों के नाम पर उस भाषा के कलाकारों, संगीतकारों को पुरस्कार देने की बात कही। साथ ही उर्दू के क्षेत्र में कव्वाली के लिए भी पुरस्कार देने पर सहमति जताई। पुरस्कार वितरण समारोह में कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव चंचल कुमार, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, बिहार राज्य संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा, बिहार ललित कला अकादमी के अध्यक्ष आनंदी प्रसाद बादल, विभाग के उप सचिव सुबोध कुमार चौधरी, निदेशक के डी प्रोज्ज्वल समेत बड़ी संख्या में अधिकारी, कलाकार और बुद्धिजीवी मौजूद थे।

इस अवसर पर चाक्षुष कला के क्षेत्र में मिलन दास को राधामोहन वरिष्ठ पुरस्कार, मंजू प्रसाद को कुमुद शर्मा वरिष्ठ महिला पुरस्कार, लोक कला के क्षेत्र में निर्मला देवी को सीता देवी पुरस्कार, मनोज कुमार बच्चन को दिनकर पुरस्कार, जगत नारायण पाठक को पंडित राम चतुर मल्लिक पुरस्कार, सुमन कुमार को भिखारी ठाकुर पुरस्कार, अजीत कुमार अकेला को बिन्ध्यवासिनी देवी पुरस्कार, रामेश्वरम प्रेम को रामेश्वर सिंह कश्यप पुरस्कार, डॉ. श्याम मोहन को बिस्मिल्लाह खां पुरस्कार तथा पंडित शिवजी मिश्रा को अंबपाली पुरस्कार से वरिष्ठ श्रेणी में सम्मानित किया गया। युवा श्रेणी में प्रदर्श कला के क्षेत्र में माला एवं जयमाला मिश्रा, राजू मिश्रा, अभिजीत चक्रवर्ती, शांतनु राय, जीतेन्द्र कुमार जबकि चाक्षुष कला के क्षेत्र में सचिन्द्र नाथ झा, कुमारी रंजिता, विभा लाल, विकास कुमार को सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री ने चाक्षुष कला के क्षेत्र में सुबोध गुप्ता तथा प्रदर्श कला के क्षेत्र में सतीश आनंद को राष्ट्रीय सम्मान पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप प्रमाण पत्र, मोमेंटो, अंगवस्त्र के साथ राष्ट्रीय सम्मान और लाइफ टाइम एचिवमेंट के लिए एक-एक लाख रुपये, वरिष्ठ सम्मान के लिए 35 हजार रुपये तथा युवा सम्मान के लिए 10 हजार रुपये प्रदान किए गए।

राजेश कुमार

पुरबिया तान ने सम्मानित किए लोकराग

पटना के प्रेमचंद रंगशाला में लोकराग-पुरबिया तान का आयोजन किया गया। लोकसंगीत के इस खास आयोजन में प्रेम, विरह, माया, आनंद, बचपन, जवानी के सदाबहार-झमकदार लोकगीतों की प्रस्तुति हालिया दिनों में पुरबिया तान अलबम के जरिये देश-दुनिया में चरचे में आयी गायिका चंदन तिवारी ने की। आयोजन में मुख्य अतिथि के तौर पर प्रसिद्ध सिने अभिनेता मनोज वाजपेयी उपस्थित रहे और उनके ही हाथों पुरबिया तान का लोकार्पण भी हुआ। जिसके अंतर्गत महेन्दर मिसिर और भिखारी ठाकुर के गीतों की प्रस्तुति की गई है। हिन्दी सिनेजगत में अपने अभिनय प्रतिभा से जलवा बिखेरने व करोड़ों दर्शकों का दिल जीतनेवाले मूलतः भोजपुरी भाषी मनोज वाजपेयी का भोजपुरी

के मंच पर आने और उसके रंग में रंगने का यह दुर्लभ व खास आयोजन था। साथ ही श्री वाजपेयी ने भोजपुरी लोकजगत के दो महत्वपूर्ण गायकों भरत सिंह भारती और भरत शर्मा व्यास को सम्मानित भी किया। दोनों महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों को 'लोकराग सम्मान-2014' से सम्मानित किया गया। समारोह के संयोजक बीएन तिवारी उर्फ भाईजी भोजपुरिया थे जबकि विशिष्ट अतिथि के तौर पर बिहारी कनेक्ट के संस्थापक अप्रवासी भारतीय उद्धेश्वर सिंह उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता भोजपुरी अकादमी, बिहार के अध्यक्ष डॉ. चन्द्रभूषण राय ने की।

कार्यक्रम के शुरू में वक्ताओं ने भोजपुरी के विलुप्त होने या फिल्म और पश्चिम की आंधी में गुम होने की आशंका जतायी। भोजपुरी भाषा और संस्कृति को संजोने और संवारने की आवश्यकता पर बल दिया गया। लुप्त होते पारम्परिक गीतों को बचाने का सार्थक प्रयास करने और विरासत को अक्षुण्ण रखने के लिए सक्रिय रहने की अपील की गई। मौजूदा दौर में भोजपुरी में अश्लीलता के संक्रमण पर चिन्ता जतायी गई। वक्ताओं में भरत सिंह भारती, भरत शर्मा व्यास, चन्द्रभूषण राय, बीएन तिवारी, श्रीकांत, शिवानंद तिवारी, उदेश्वर सिंह आदि थे। कार्यक्रम के दरम्यान सिने अभिनेता मनोज वाजपेयी ने भोजपुरी भाषा, गीतों और संस्कृति के संरक्षण पर जोर दिया। कार्यक्रम में उन्हें शॉल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रारंभ में कार्यक्रम के संयोजक और समन्वयक निराला ने पुरबिया तान की सार्थकता और उपयोगिता को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन रंगकर्मी अनीश अंकुर ने किया।

पुरबिया तान लोकगीतों की एक नयी शृंखला है, जिसके तहत गायिका चंदन तिवारी भोजपुरी के 100 कालजयी, सदाबहार, झमकदार व पारंपरिक लोकगीतों की शृंखला तैयार कर रही हैं। इसके तहत पहली कड़ी में महेन्दर मिसिर व भिखारी ठाकुर के गीतों की एक शृंखला तैयार हुई, जिसका लोकार्पण इस खास आयोजन में हुआ।

लोकराग पुरबिया तान के इस खास आयोजन के जरिये 10 जुलाई को भिखारी ठाकुर की आनेवाली पुण्यतिथि के पहले उन्हें उनके गीतों को जारी कर उन्हें श्रद्धांजलि तो दी गई, साथ ही कुछ माह पहले दिवंगत हुए भोजपुरी के मशहूर लोकगायक गायत्री ठाकुर को भी याद किया गया। गायत्री ठाकुर ने रामायण के सैकड़ों पदों को लोकगीतों में बेहद खूबसूरती

से ढाला था और जिसे देश दुनिया में ख्याति मिली थी।

इस कार्यक्रम का संयोजन लोकराग के द्वारा किया गया जो गांव के गलियों में बिखरे लोकगीतों के डिजिटल डोक्यूमेंटेशन करने व नये-संभावनाशील युवा गायक-गायिकाओं की प्रतिभा को उभारने व मौका देने का एक मंच है। इस खास संगीत समारोह के मुख्य आयोजक के तौर पर अखिल विश्व भोजपुरी विकास मंच की भूमिका रही जबकि सह आयोजक के रूप में प्रवासी बिहारियों को वर्ल्डवाइड कनेक्ट करनेवाली संस्था 'बिहारीकनेक्ट' तथा सामुदायिक व मोबाइल रेडियो के जरिये संचार क्रान्ति में एक खास पहल कर रही

मंच पर साकार हुए भिखारी

राग ने विगत पाँच वर्षों में पाँच नाटकों की लगभग पचास प्रस्तुतियाँ की हैं। अपनी नवीनतम प्रस्तुति 'नटमेठिया' को राग ने कालिदास रंगालय में मंचित किया। 'नटमेठिया' एक जीवनीपरक नाटक है जिसके केन्द्र में हैं लेखक, कवि, अभिनेता, निर्देशक, गायक, रंग प्रशिक्षक भिखारी ठाकुर और भारतीय समाज की जटिल वर्गीय व जातीय बुनावट । भिखारी ठाकुर की संघर्षशील जीवनयात्रा का काल 1887 से 1971 है। 'नटमेठिया' के केन्द्र में नाच जैसी इरोटिक और विशुद्ध मनोरंजन मात्र के रूप में लोकप्रिय विधा भी है जिसे परिष्कृत और कलात्मक बनाकर आज के आदमी का दु:ख-दर्द को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनाकर प्रस्तुत करने की छटपटाहट भिखारी ठाकुर के अन्दर साफ-साफ महसूस किया जा सकता है जिसमें एक तरफ सामाजिक संघर्ष है तो दूसरी तरफ एक कलाकार के अपने अंतर्जगत का संसार। कहीं परम्परा का निर्वाह है तो कहीं उसके घुटन भरे ताने-बाने से निकलने की छटपटाहट ।

यह नाटक नाट्यकला के प्रति पूर्णत: समर्पित भिखारी ठाकुर के जीवन कला व लेखन के माध्यम से एक खास प्रकार का दलित व स्त्री विमर्श भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है जिसमें उनके संघर्ष के साथ ही साथ भारतीय वर्ग वर्ण व्यवस्था का सजीव रोचक व क्रूर चित्रण भी सामने आता है।

समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ जब कोई कलाकार पारंपरिक कलात्मक व सामाजिक तौर-तरीकों, प्रतीकों का इस्तेमाल सुधारवादी चिन्तन के लिए करता है तो उसे लोकप्रियता के साथ ही साथ कला और समाज के विचारों के अंतर्द्वन्द्व का भी सामना करना पड़ता है। इस द्वन्द्व के सार्थक इस्तेमाल से ही तो कला और समाज दोनों में निखार आता है और मानवीय संवेदनाएं वर्जनाओं और कर्मकांडों से ऊपर उठकर और ज्यादा मानवीय होने की दिशा में अग्रसर होती हैं।

तमाम वर्गीय वर्णों, जातियों, समुदायों में विभाजित, सामंती और उपभोक्तावादी मानसिकता से ग्रसित समाज में कला कलाकार वर्ग और समाज का संघर्ष पुराना है। तिथियाँ बदली हैं, परिस्थितियां बदली हैं स्वरूप बदला है, तरीका बदला है किन्तु यह संघर्ष आज भी समाप्त नहीं हुआ है। प्रस्तुत नाटक भिखारी ठाकुर के माध्यम से कला-कलाकार व समाज के बीच व्याप्त इसी द्वन्द्व व संघर्ष की एक व्यावहारिक गाथा है।

नाटक के लेखक थे पुंज प्रकाश जबकि निर्देशन रणधीर कुमार का था। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से 2008 में स्नातक की उपाधि प्राप्त रणधीर कुमार रंगशिल्प और रंग-स्थापत्य के विशेषज्ञ हैं। उनकी अब तक की उल्लेखनीय प्रस्तुतियाँ हैं–खामोश अदालत जारी है, नेटुआ, जायज हत्यारे, वेटिंग फॉर गॉडो, ब्लैक हर्मिट, वॉयस ऑफ लाइफ, गुलाबबाई, अक्करमाशी, नवान्न और प्यूट्रिड प्रोलाग आदि। चीन में आयोजित होनेवाले प्रतिष्ठित गैट्स फेस्टिवल (2009-11) में उन्होंने एक प्रस्तुति परिकल्पक के तौर पर भागीदारी की है। नटमेठिया में मुख्य भूमिका सुनील बिहारी, अजित कुमार, मनीष महिवाल, बुलु कुमार, शिल्पा भारती, रवि महादेवन ने निभायी थी। संगीत पुंज प्रकाश का था।

गुरु शिष्य परंपरा का अद्भुत रूप दिखा विरासत में

पहले संतूर बजा, फिर तबले पर थाप लगा और आखिर में बांसुरी की तान सुनकर लोग झूम उठे । डीडी बिहार के दो दिवसयी संगीत समारोह विरासत की शुरुआत शानदार रही। रवीन्द्र भवन में उपमहानिदेशक दीपक कुमार, केन्द्र निदेशक पुरुषोत्तम नारायण सिंह और पद्मश्री गजेन्द्र नारायण सिंह ने दीप जलाकर इस संगीत समारोह का उद्घाटन किया।

विरासत की पहले दिन मंच पर बारी-बारी से तीन वाद्ययंत्र, तीन घराने और तीन जोड़ियों का कमाल देखने-सुनने को मिला। गुरु-शिष्य परंपरा के तहत पिता-पुत्र और पिता-पुत्री की जोडियां बारी-बारी से मंच पर आयीं और डीडी बिहार के संगीत समारोह को यादगार बना गई।

संगीत समारोह 'विरासत' की शुरुआत संतूर वादन से हुई। पद्मश्री पंडित भजन सोपोरो के राग पुरिया कल्याण से अपने संतूर वादन की शुरुआत की।

फिर पुत्र अभय रुस्तम सोपोरी के साथ खूबसूरत आलाप लगाए। पिता-पुत्र का तालमेल देखकर हर कोई वाह-वाह कर रहा था। आखिर में जोड़ और कुछ गतों के साथ जब समापन किए तो पूरा हॉल तालियाँ से गूंज उठा। इनके साथ तबले पर संगत कर रहे उस्ताद साबिर खां और तानपुरे पर कुमारी आरती मिश्रा का वादन भी लोगों को खूब पसंद आया।

फिर बारी आई मशहूर तबला वादक सुरेश तलवरकर और उनकी बिटिया सावनी तलवरकर की। पिता और पुत्री की जोड़ी ने ताल झपताल में ऐसा तबला बजाया कि लोग वाह-वाह कर उठे। इनके साथ संगत कर रहे गोविंद पार्वती भीलारे (पखावज), विनय रामदासन (संगत गायन), चिन्मय कोल्हटकर (हारमोनियम), विजय कुमार सिंह (तानपुरा) का वादन भी लाजबाव था। आखिर में दिल्ली से आए पंडित राजेन्द्र प्रसन्ना ने बेटे राजेश प्रसन्ना के साथ बांसरी की तान छेड़कर श्रोताओं के दिलों में उतर गए। पहले दिन कार्यक्रम का संचालन डॉ. भावना शेखर कर रही थी और इस अवसर पर डॉ. राजकुमार नाहर, मगनदेव नारायण सिंह, वरिष्ठ पत्रकार नवेन्दु सहित कई लोग उपस्थित थे।

दूसरे दिन वायलिन से शुरुआत हुई। संगीत किस कदर अपना असर छोड़ता है, यह 'विरासत' के दूसरे दिन देखने को मिला। पहले दिन का असर यह था कि दूसरे दिन दर्शकों और श्रोताओं की संख्या बढ़ गई।

खुद कला और संस्कृति मंत्री विनय बिहारी भी संगीत समारोह में पहुंच गए और देर तक बैठे रहे ।

विरासत के दूसरे दिन की शुरुआत डॉ. संतोष के वायलिन वादन से हुई। राग यमन के साथ डॉ. संतोष ने शुरुआत की। फिर यमन में रचित द्रुत एक ताल की बंदिश को इतनी खूबसूरती से गाए कि तालियां गूंजने लगी। तबले पर संगत कर रहे राशिद मुस्तफा और तानपुरा बजा रही कुमारी आरती मिश्रा ने शानदार संगत

करके एक अलग ही माहौल बना दिया। फिर राजस्थान के पधारो म्हारे देस..... को पूर्वी अंदाज में बजा सबका दिल जीत लिया ।

इसके बाद इलाहाबाद से आए पंडित रविशंकर उपाध्याय ने अपने बेटे ऋषि शंकर और बेटी महिमा के साथ शानदार पखावज बजाया। पिता-पुत्र और पुत्री की तिकड़ी ने इस अंदाज में पखावज बजाया कि शायद ही लोग भूल पाए। कभी पिता अपने पुत्र से आगे निकलते थे, तो कभी पुत्र और पुत्री पिता को जोरदार टक्कर देने लगते थे। इस तिकड़ी ने गणेश स्तुति को पखावज की ताल पर उतार कर शानदार शुरुआत की। फिर चौताल और धमाल बजा कर महफिल लूट ली। संतोष मिश्र का सारंगी और सृष्टि सरगम का तानपुरा वादन इस प्रस्तुति में चार चांद लगा रहा था ।

विरासत की आखिरी प्रस्तुति दिल्ली से आए पंडित देबू चौधरी की रही। उन्होंने अपने सितार वादन से सबको झंकृत कर दिया। राग मिया म्लहार के साथ उन्होंने शुरुआत की। इसके बाद ऋतुओं पर आधारित बंदिशों को इस तरह से बजाए कि देर तक तालियां बजती रही। बेटे प्रतीक चौधरी के साथ तीन ताल में बंदिशें बजा कर उन्होंने खूब वाहवाही लूटी। बनारस से आए अकरम खां ने तबले पर और पटना की आरती ने तानपुरा पर शानदार संगत करके दिल जीता। इस अवसर पर कला संस्कृति मंत्री विनय बिहारी के साथ-साथ पद्मश्री गजेन्द्र नारायण सिंह, डीडी बिहार के केन्द्राध्यक्ष दीपक कुमार, केन्द्र निदेशक पुरुषोत्तम नारायण सिंह, कार्यक्रम अधिशासी डॉ. राजकुमार नाहर, प्रो. श्याम शर्मा, डॉ. माया शंकर, रत्ना पुरकायस्था आदि श्री उपस्थित थे ।

दीपक दक्ष

कलाकार कल्याण कोष से कलाकारों को वित्तीय सहायता हेतु आवेदन आमंत्रण

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के सांस्कृतिक कार्य निदेशालय में राज्य के कलाकारों की सहायता के लिए एक कल्याणकारी योजना **कलाकार कल्याण कोष** है। इस योजना के तहत् बिहार राज्य के कलाकारों से निम्न प्रावधानों तथा नियमों के तहत वित्तीय सहायता हेतु आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं

(क) चिकित्सा/इलाज हेतु सहायता अनुदान :-

1. बीमार अथवा घायल होने के संबंध में चिकित्सा प्रमाण-पत्र/गंभीर रोग से ग्रसित कलाकार, जिन्हें शल्य चिकित्सा होना है, अथवा जिनका ऑपरेशन हो चुका है, का प्राक्कलन सरकारी अस्पताल अथवा सी.जी. एस.एच. से अनुमोदित अस्पताल का प्राक्कलन, प्रमाण-पत्र एवं अन्य साक्ष्य संलग्न करना अनिवार्य होगा। प्राकृतिक आपदा से ग्रस्त कलाकार को संबंधित पंचायत के मुखिया एवं शहरी क्षेत्र के लिए वार्ड पार्षद का प्रमाण-पत्र देना होगा।

(ख) प्रदर्श कला के क्षेत्र में सहायता अनुदान :-

1. अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रम में आमंत्रण पर शिरकत करने हेतु प्रस्तुति के विभिन्न अवसरों के लिए सहायता दी जा सकती है। आमंत्रण का प्रमाण पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा।
2. देश के महत्वपूर्ण संस्थानों में राष्ट्रीय नाट्य एकेडमी या समकक्ष कथक केन्द्र/कलाक्षेत्र जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में नामांकित होने वाले राज्य के कलाकारों को उच्च अध्ययन/शोध हेतु एकमुश्त आर्थिक सहायता दी जा सकती है। आमंत्रण का प्रमाण संलग्न करना अनिवार्य होगा।
3. राज्य से बाहर कला प्रदर्शन हेतु आर्थिक सहायता राज्य के बाहर प्रदर्शन का प्रमाण संलग्न करना अनिवार्य होगा।

(ग) चाक्षुष कला के सहायता हेतु अनुदान :-

1. अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय महत्व की कला प्रदर्शनियों में आमंत्रण पर शिरकत करने हेतु फीस/प्रदर्शनियों की तैयारी, मार्ग व्यय आदि के रूप में आर्थिक सहायता दी जा सकती है। आमंत्रण का प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है।
2. देश के महत्वपूर्ण संस्थानों में मास्टर्स डिग्री/शोध कार्य हेतु प्रतिभाशाली कलाकारों को एकमुश्त आर्थिक सहायता दी जा सकती है। शोध एवं अध्ययन से संबंधित महाविद्यालय का प्रमाण एवं व्यय का प्राक्कलन, संस्थान प्रमुख का अनिवार्य है।
3. राज्य से बाहर महत्वपूर्ण कला दीर्घाओं, आधुनिक कला संग्रहालयों में कला प्रदर्शनी हेतु आर्थिक सहायता। कला दीर्घा के आरक्षण का प्रमाण एवं प्राक्कलन संलग्न करना अनिवार्य होगा।

1. कलाकार को आवेदन विहित प्रपत्र में (सरकार द्वारा निर्धारित आवेदन प्रपत्र में) अपना नाम, फोटोग्राफ, पिता का नाम, पता, दूरभाष सं., कलाकार की उपलब्धि (प्रमाण-पत्र एवं अन्य उपलब्धियों की छायाप्रति संलग्न करना अनिवार्य है) साथ ही आवेदन पत्र के अंत में अपना हस्ताक्षर तिथि के साथ अंकित करना चाहिए।
2. आवेदक आवेदन पत्र में वर्तमान पत्राचार पता और दूरभाष सं. यदि हो, अंकित करें ताकि बैठक के पूर्व उन्हें सूचना दी जा सके। आवश्यकता होने पर आवेदक को समिति के समक्ष ससमय उपस्थित होना पड़ सकता है। इसके लिए किसी प्रकार का मार्ग व्यय सरकार द्वारा आवेदक को देय नहीं होगा।
3. सहायता अनुदान की स्वीकृति, गठित अनुदान समिति द्वारा दी जायेगी। अनुदान की राशि तय करना अनुदान समिति का क्षेत्राधिकार है। समिति का निर्णय अंतिम होगा।
4. उदीयमान कलाकार, जो अभावग्रस्त परिस्थितियों में हैं और जिनकी मासिक आय ` 5,000/- से कम है, को चिकित्सा के अतिरिक्त उपस्कर, वाद्य यंत्र, कला सामग्री के क्रय हेतु समिति की अनुशंसा पर वित्तीय सहायता दी जा सकती है।
5. सरकारी कर्मी को कलाकार कल्याण कोष का लाभ देय नहीं होगा।
6. आवेदकों को कोष से राशि की स्वीकृति उनका अधिकार नहीं माना जायेगा।
7. वैसे कलाकार अनुदान के पात्र होंगे, जिनकी आय 30,000/- रु॰ मासिक से ज्यादा नहीं हो। तत्सम्बंधी आय प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा।
8. बिहार राज्य कलाकार कल्याण कोष से सहायता हेतु आवेदन-पत्र निम्न विहित प्रपत्र में देय होगा (आवेदन पत्र पर किसी राजपत्रित पदाधिकारी/ चिकित्सक के द्वारा सत्यापन कराकर दिये जाने से जांच में सुविधा/शीघ्रता होगी)
9. कलाकार कल्याण कोष से चिकित्सा हेतु वित्तीय सहायता के लिए आवेदन के साथ सरकारी अस्पताल/अद्ध सरकारी अथवा सी.जी.एच.एस. से अनुमोदित अस्पताल का प्राक्कलन (स्टीमेट) संलग्न करना अनिवार्य है।
10. अनुदान हेतु आवेदन पत्र विहित प्रपत्र में निदेशक, सांस्कृतिक कार्य, नया सचिवालय, विकास भवन, तीसरी मंजिल, पटना-800015 के पते पर वर्षपर्यन्त भेजा जा सकता है। प्राप्त आवेदनों पर आवश्यकतानुसार समय-समय पर समिति की बैठक में निर्णय लिये जायेंगे।
11. वर्त्तमान वित्तीय वर्ष 2014-15 में वित्तीय सहायता हेतु आवेदन 14 अगस्त 2014 तक उपरोक्त कंडिका 10 पर वांछित पेपर के साथ विहित प्रपत्र में उपलब्ध कराया जा सकता है। अपूर्ण तथा वांछित कागजात के विहित प्रपत्र में आवेदन नहीं होने की स्थिति में आवेदन निरस्त कर दिया जायेगा।
12. उपर्युक्त अंकित, क, ख एवं ग में वित्तीय सहायता हेतु आवेदन को विहित प्रपत्र में आवेदन के साथ अद्यतन आय प्रमाण-पत्र संलग्न करना है।
13. **इस योजना के तहत अनुदान/वित्तीय सहायता मात्र एक बार एकमुश्त प्रदान किये जायेंगे।**

(के.डी. प्रौज्ज्वल)
निदेशक, सांस्कृतिक कार्य

-: विहित प्रपत्र :-

1. आवेदक का नाम (साफ अक्षरों में):-
2. पिता का नाम :-
3. पूरा डाक पता :-
4. स्थायी पता :-
5. जन्म तिथि (दस्तावेज सबूत सहित) :-
6. वर्तमान व्यवसाय/नियोक्ता के नाम एवं पूरा पता :
7. कलाकार/विधा, जिसमें भाग लिया था/है :-
8. कलाकार परिणाम/उपलब्धियाँ (अभिप्रमाणित साक्ष्य के साथ) :-

कलाकार	विधा	वर्ष	स्थान	उत्सव/ महोत्सव का नाम	प्राप्त स्थान	अभियुक्ति

कृपया सभी राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम में राज्य का प्रतिनिधित्व करने से संबंधित दस्तावेजों की प्रतियाँ संलग्न करें।

9. परिस्थितियाँ एवं उद्देश्य जिसके लिए वित्तीय सहायता अपेक्षित है
10. अपेक्षित वित्तीय सहायता की राशि।
11. पूर्व में विभाग से प्राप्त अनुदान का ब्योरा :-
12. आवेदक का सभी स्रोतों से वार्षिक आय :-
13. अन्य स्रोतों से यदि इस प्रयोजनार्थ कोई वित्तीय सहायता ली गई हो, तो सहायता राशि सहित ब्योरा अपेक्षित है।
14. कोई अन्य संबंधित सूचना

दिनांक :-

आवेदक का पूरा हस्ताक्षर

स्थान :-

नाम:-

सुर्खियों में संस्कृति

मुख्यमंत्री सचिवालय में शनिवार शाम हुआ बिहार कला पुरस्कार का वितरण समारोह, मुख्यमंत्री ने
की कला और कलाकारों को हर संभव सहयोग देने की घोषणा

सरकारी सेवाओं में होंगे कलाकार

सरकारी नौकरियों मे कलाकारों को आरक्षण

सरकारी सेवाओं में कलाकारों को मिलेगा आरक्षण

पांच जुलाई को 24 कलाकारों को किया जायेगा सम्मानित

बिहार के इन कलाकारों के काम पर हमें है गर्व

'विरासत' में पखावज

कला, संस्कृति विभाग द्वारा हुई फोटोग्राफी प्रतियोगिता के विजेता घोषित

पीपल और पंतपाकड़ ने जोड़ा जड़ों से

मैन गया के ऐतिहासिक

Indian Art Offset, Patna-6, Mob. 9431011172